शोध-प्रारूप

मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन

पीएच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप

जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय, राँची
विश्वविद्यालय राँची

से पीएच0 डी0 उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोध निर्देशक

मनय मुण्डा
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

तुलसी हरि मुण्डा
यू0 जी0 सी0 नेट/जे0 आर0 एफ0
एम0 ए0 (मुण्डारी) उत्तीर्ण

मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन

भूमिकाः

भारत के मानचित्र पर गौर करने से ज्ञात होता है कि स्वर्ग के समान खूबसूरत धरती का वह टुकड़ा जो बिहार राज्य के दक्षिणी हिस्सा को **15/11/2000** में अलग होकर झारखण्ड राज्य के रूप में आस्तित्व में आया। प्रकृति की गोद में बसा इस राज्य की पवित्र धरती को विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे, नदी-नाला एवं पहाड़-पर्वत इनकी शोभा बढ़ा रहे हैं। इस राज्य में रहने वाले रंग-बिरंग पशु-पक्षी एवं जनजातियों का गीत संगीत चारों दिशाओं को संगीतमय बना रहे हैं।

झारखण्ड की इसी पवित्र एवं उर्वर भूमि में अनेक जनजातियों का मूल निवास है तथा वे सभी अपनी-अपनी सांस्कृतिक विशिष्टताओं को लिये हुए इस राज्य को अलंकृत कर रहे हैं। ''मुण्डा'' उसी में से एक प्रमुख जनजाति है, इसकी भाषा मुण्डारी है जो झारखण्ड की प्रमुख जनजातीय भाषा श्रेणी में आती है तथा जन संख्या की दृष्टि से मुण्डा जनजाति तीसरा स्थान में आती है। विश्व की भाषाओं का वर्गीकरण से ज्ञात होता है कि मुण्डा भाषा युरेशिया खण्ड के आग्नेय आस्ट्रो एशियाटिक भाषा परिवार की एक भाषा है जो झारखण्ड के साथ-साथ उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, असम तथा अन्य भागों में बोली जाती है। गौरतलब यह है कि मुण्डा साहित्य का विस्तार अब धीरे-धीरे हो रहा है।

भाषा तथा संस्कृति एवं साहित्य तीनों एक दूसरे के पूरक हैं मानव एवं प्रकृति के बीच साझेदारी सहयोग और जीवतंता का जीवन दर्शन हमारे पूर्वजों की देन है जिससे हम आदिवासियों की अपना भाषा संस्कृति है। इसके द्वारा मुण्डा जनजातियों का अपना मौखिक साहित्य सम्पदा एवं मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन का विस्तार के साथ-साथ मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन सम्बन्धी नए शोध कार्य करने की संभावना उत्पन्न होती है। मुण्डारी लोकसाहित्य काफी समृद्ध है। इसमें लोक-कथाओं, लोकगीतों, लोकोक्तियों और पहेलियों का विशाल भंडार है। भाव सौंदर्य की दृष्टि से गीत अत्यन्त उन्नत है तथा इसके विविध प्रकार-सुर, ताल, लय इसी विशिष्टता के परिचायक है।

प्रेरणाः

मेरा जन्म छोटानागपुर के मुण्डा बहुल क्षेत्र और मुण्डा भाषा परिवार में होने के कारण वाल्यावस्था से ही इस मुण्डारी भाषा के प्रति मेरा जुड़ाव रहा है। एम0 ए0 में मुण्डारी भाषा से अध्ययन करने के पश्चात मुझे ऐसा लगा कि मुण्डारी भाषा में और अधिक काम किया जा सकता है जिसमें मुण्डा समाज में भाषा-संस्कृति, कला और साहित्य का विस्तार हो सकेगा।

अतः मैंने क्रमानुसार मुण्डारी भाषा की पढ़ाई शुरू किया। पढ़ाई के क्रम में मुण्डारी भाषा के विभिन्न विधाओं जैसे-लोकगीत, लोकोक्तियों, पहेलियों तथा अन्य विधाओं का अध्ययन किया। इसके साथ ही साथ मुण्डारी साहित्य और हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा अन्य साहित्य विधाओं का अध्ययन किया।

विभिन्न मुण्डारी रचनाओं का अध्ययन करने के बाद मैंने मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन विषय पर शोध कार्य करने का निर्णय लिया। इस शोध कार्य में मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन अध्ययन विस्तार से किया जाएगा। समाज के सामने इस पुस्तक को प्रस्तुत करना ही मेरा बहुत बड़ा उपलब्धि होगा।

परिकल्पनाः

किसी विषय पर शोध की चर्चा करने से पहले मन में एक कल्पना का प्रादूर्भाव होता है कि शोध कैसा होना चाहिए मन में कैसे आया कि इसी विषय पर ही शोध करना है। जब मैं उच्च विद्यालय में पढ़ाई कर रहा था उस समय मामा के यहाँ रहता था। मामा काफी रसिक इंसान थे वे करमा सरहुल आदि त्योहारों के नाच-गान में भाग लेते थे और मुझे भी अपने साथ ले जाते थे। वहाँ पर मामा के साथ नाना प्रकार के गीतों का श्रवण करते थे जिससे मेरे मन में भी लोक गीतों के प्रति रूचि बढ़ने लगी। फिर मैंने मुण्डारी गीतों को नया आयाम देने के लिए मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन विषय पर पीएच0 डी0 करने की सोचा जिसमें मुण्डारी लोक गीतों, लोक कथाओं, लोकोक्तियों, पहेलियों तथा अन्य तथ्यों का अध्ययन जरूरी है।

मैंने मनय मुण्डा के निर्देशन में इस विषय पर शोध कार्य करने का मन बनाया है। इसके माध्यम से समाज के मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन के प्रति बढ़ती उदासीनता को दूर कर इन विधाओं में जन-मानस के प्रति रूचि जागृत हो सकता है।

शोध क्षेत्रः

मेरा शोध क्षेत्र होगा समस्त मुण्डा भाषा क्षेत्र जहाँ मुण्डारी भाषा बोलने वाले बहुलता से पाये जाते है। इसके अतिरिक्त वैसे क्षेत्र जहाँ मुण्डारी भाषा सांस्कृति के लोग जा कर बसे है। इस अनुसंधान का क्षेत्र मुख्य से झारखण्ड राज्य होगा जहाँ मुण्डा भाषा-भाषी रहते हैं। इसके अलावे पंश्चिम बंगाल, उड़ीसा, असम, छत्तीसगढ़ इत्यादि में बोली जाती है।

शोध का उद्देश्यः

इस शोध को पूरा करने से निम्नलिखित उद्देश्यों के सिद्ध होने की संभावनाएँ-

1. मुण्डारी भाषा के आधुनिक गीतों के भण्डार को जानना एवं उसका गहनता से अध्ययन करना।
2. मुण्डारी गीतों के परिवेश को जानना।
3. मुण्डारी गीतों के साहित्यकार का परिचय देना।
4. मुण्डारी भाषा एवं साहित्य के स्वरूपों को जानना एवं समाज के सामने प्रस्तुत करना।
5. मुण्डारी साहित्य का गहन अध्ययन करना।
6. झारखण्ड के सामाजिक एवं सांस्कतिक विकास में योगदान देना।
7. समाजिक, सांस्कृतिक, भाषायिक, धार्मिक जीवन मूल्यों को समाज के सामने लाना ताकि समाज व साहित्य को एक नई दिशा देने का कार्य प्रशस्त हो सके।

शोध विधिः

प्रस्तावित शोध प्रबंध के अध्ययन के लिए निम्नलिखित शोध विधियों का अनुशरण किया जाएगा।

1. अवलोकन

2. साक्षात्कार

3. सहभागिता

4. प्रश्नावली

5. विश्लेषण

6. सर्वेक्षण

उपकरणः

निम्नलिखित सामग्री शोध कार्य के लिए उपयोग किये जा सकते हैं। शोध से संबंधित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएँ सदंर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।

- पत्र पत्रिकाएँ जैसे समाचार पत्र
- इंटरनेट कम्प्यूटर प्रिन्टर और कैमरा का प्रयोग टेप रिकॉर्डर और वीडियो ग्रंथ हेतु पुस्तकें।
- टेप रिकॉर्डर साक्षात्कार सभा आदि का प्रयोग जरूरत के अनुसार।
- कैमरा आवश्यक चित्रों का एकत्रित करने, फोटो खींचने एवं वीडियो तैयार करने के लिए।
- मोबाईल।

शोध का समाज पर प्रभावः

’मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन’ इस विषय पर शोध कार्य होने पर समाज में बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा चूँकि लोग वर्तमान समय के साथ-साथ चलना चाहते हैं। आज के इस युग में कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाईल, टी.बी. जैसे आधुनिक यंत्र ना होती तो मानव का आज इतना विकास नहीं हो पाता। ठीक उसी प्रकार साहित्य में भी हमे राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक शिक्षा के पक्ष से संबंधित विषय मुण्डारी लोकगीतों में आधुनिकता का प्रभाव पड़ा है। जिनमें अध्ययन करने से लोगों के जीवन में मदद मिलेगी।

उपयुक्त शोध विषय में लोकगीतों के आधुनिक प्रावृतियों पर चर्चा की जाएगी तथा वर्तमान में समाज के सभी वर्गों के लिए इस शोध कार्य से लाभान्वित हो सकेंगे।

पहला अध्यायः

मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन का सामान्य परिचय

1. जीवन दर्शन का परिचय

2. समाज व जीवन दर्शन

3. साहित्य एवं जीवन दर्शन

दूसरा अध्यायः

मुण्डारी गीतों का सामान्य परिचय

1. मुण्डारी गीतों का अवधारणा

2. मुण्डारी गीतों का स्वरूप

3. मुण्डारी गीतों का ऐतिहासिक तत्व

4. मुण्डारी गीतों की विशेषताएँ

5. मुण्डारी गीतों के वर्गीकरण का आधार

तीसरा अध्यायः

मुण्डारी गीतों का वर्गीकरण

1. मुण्डारी लोक गीत

2. मुण्डारी शिष्ट गीत

चौथा अध्यायः

मुण्डारी लोक गीतों में जीवन दर्शन

1. ऋतु आधारित लोक गीतों में जीवन दर्शन

2. पर्व त्योहार लोक गीतों में जीवन दर्शन

3. संस्कार लोक गीतों में जीवन दर्शन

4. कृषि लोक गीतों में जीवन दर्शन

5. खेल लोक गीतों में जीवन दर्शन

6. अन्य लोक गीतों में जीवन दर्शन

पांचवा अध्यायः

मुण्डारी शिष्ट गीतों में जीवन दर्शन

1. ऋतु आधारित शिष्ट गीतों में जीवन दर्शन

2. पर्व त्योहार शिष्ट गीतों में जीवन दर्शन

3. संस्कार शिष्ट गीतों में जीवन दर्शन

4. कृषि शिष्ट गीतों में जीवन दर्शन

5. खेल शिष्ट गीतों में जीवन दर्शन

6. अन्य शिष्ट गीतों में जीवन दर्शन

छठवाँ अध्यायः

मुण्डारी गीतों में संस्कार सम्बन्धी जीवन दर्शन

1. जन्म संस्कार के संदर्भ में जीवन दर्शन

2. विवाह् संस्कार के संदर्भ में जीवन दर्शन

3. मृत्यु संस्कार के संदर्भ में जीवन दर्शन

सातवाँ अध्यायः

मुण्डारी गीतों में जीवन दर्शन

1. प्रकृति

2. विश्वास

3. जीवन शैली

4. धर्म दर्शन

5. सभावनाएँ

6. आधुनिक परिवेश में मुण्डारी गीतों की महत्व

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूचीः-

नोटः- शोध प्रबंध में आंशिक परिवर्तन संभावित है।

शोध निर्देशकः	शोधकर्ताः
मनय मुण्डा	तुलसी हरि मुण्डा
विभागाध्यक्ष	यू0जी0सी0 नेट/जे0 आर0 एफ0
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग	एम0 ए0 (मुण्डारी) उत्तीर्ण
राँची विश्वविद्यालय, राँची	

आधार ग्रंर्थ सूची

क्र0	पुस्तक	लेखक
1.	मुण्डारी लोक गीतों में प्रकृतिक चित्रण	जय सिंह नाग
2.	मुण्डारी भाषा के क्षेत्रीय रूपों की मासिक संरचना	विरेंन्द्र कुमार सोय
3.	मुण्डारी शिष्ट साहित्य का अध्ययन	सेलेस्टीना कंडील
4.	मुण्डारी भाषा साहित्य के विकास में पश्चात्य भारतीय एवं मुण्डा विद्वानों का योगदान	डिलीट वीरेंद्र कुमार सोय
5.	मुण्डा लोक परंपरा का वैज्ञानिक अध्ययन	अजीत मुण्डा
6.	झारखंड के प्रमुख भाषा में खेल संस्कृति एवं गीत	सिजरेन सुरीन
7.	मुण्डारी एवं भूमिज भाषा का तुलतनात्मक अध्ययन	नीलीमा प्रभा सुरीन
8.	मुण्डारी लोक साहित्य को कथानक रूढ़ियां	डॉ मनसिद्ध बड़ाएऊद
9.	मुण्डा साहित्य में संस्कार एक अध्ययन	जुरन सिंह मनकी
10.	रामदयाल मुण्डा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	शांति नाग
11.	संताली साहित्य में स्त्री विमर्श एक अध्ययन	दिनेश कुमार मुर्मू
12.	खड़िया मुण्डा और उराँव संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन	डुंगडुंग ये.स.

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्र0	पुस्तक/प्रकाषक	लेखक	वर्ष
1.	मुण्डा दुरङ, - राँची	आर्चर डब्ल्यू जी.	1942 ई0
2.	मुण्डा लोक कथाएँ, राँची	जगदीश त्रिगुणायत	1968 ई0
3.	सोसो बोंगा, राँची,	जगदीश त्रिगुणायत तथा भइयाराम मुण्डा	1966 ई0

4. सिंङ बोंगा ओड़ोः एटअः मेनस राम ओड़ेया 1968 ई0
एटअः बोंगा को राँची
5. मुण्डा कोअः नुतुम कहानिको डॉ0 मनसिद्ध बड़ाएऊद
ओड़ोः होने कोअः इनुङ्
दुरङ् को राँची
6. मुण्डा कोअः सोना डा0 मनसिद्ध बड़ाएऊद 2010 ई0
7. दंड़ा जमाकन होड़ो कहानी भइयाराम मुण्डा 2011 ई0
को राँची (द्वितीय संस्करण)
8. अनायुम दुरङ् राँची डॉ0 रामदयाल मुण्डा 2010 ई0
9. आदि धरम नई दिल्ली डॉ0 रामदयाल मुण्डा 2009 ई0
तथा रतन सिंह मानकी
10. इन्साइक्लोपीडिया फा0 हॉफमन 1930 ई0
मुंडारिका, पटना
11. मतुराअः कहनि मेनसराम ओड़ेया 1984,1986,
(5 भाग) राँची 1988,1989ई0
12. दुरंङ् को कोरे मंगल सिंह मुण्डा 2013 ई0
अद् जना, राँची
13. गेल बर कानि को, राँची नवीन मुण्डु
14. मुण्डा ससंकिर दुरङ् पुथी, राँची जोसेफ कन्डुलना 2013 ई0
15. अबुअः दिसुम मुण्डा रेमिस कन्डुलना 2009 ई0
दुरङ् राँची
16. दिसुम सुरूद् सुड़ा संगेन राँची रेमिस कन्डुलना 2012 ई0
17. धरम दुरङ् राँची दाऊद दयाल सिंह होरो 1968 ई0
18. भरमि मुण्डाअः दुरङ् को डॉ0 कु0 सुरेश सिंह
राँची वर्ष असुद्रित
19. मुण्डारी लोक साहित्य सिकरादास तिर्की 2010 ई0
में ऐतिहासिक तथ्य राँची
20. मुडाज ऐण्ड देयर शरतचन्द्र राय 1912 ई0
कंट्री, कलकत्ता
21. होड़ो जगर गअः इदि डॉ0 मनसिद्ध 2011 ई0
गमुइदि जमा राँची बड़ायऊद
22. सेड़ा दुवार राँची डॉ0 वीरेन्द्र कुमार सोय 2006 ई0
23. ससंबा काण्डे काशीनाथ सिंह मुण्डा 1972 ई0
24. गुइरम काण्डे काशीनाथ सिंह मुण्डा 1980 ई0
25. हिसिर डॉ0 रामदयाल मुण्डा
26. सेलेद डॉ0 रामदयाल मुण्डा
27. बुदु बाबू और डॉ0 रामदयाल मुण्डा 1977 ई0

उसकी रचनाए

प्रीतपाला एवं

रामायणपाला

28.	बम्बारू	पो0 दुलाय चन्द्र मुण्डा
29.	जादुर दुराडंको हानटिडं-1	डॉ0 रामदयाल मुण्डा अनुवाद-गुंजल इकिर मुण्डा
30.	बाँसुरी बाज रही	जगदीश त्रिगुणायत
31.	बा चण्डुऊ आन लोअऊ	डॉ0 सिकरादास तिर्की
32.	जव सुसुन अकड़ा	बिरसा ओडेया, सुकराम मुण्डा